शोध पत्र

विरह एवं प्रेम की कविताई : संत मीरा बाई

* Dr. (Mrs.) Parveen Sharma **Sh. K.K. Ahuja

भारत के सन्त–कवियों में लोकप्रियता की दृष्टि से मीरा बाई का स्थान बहुत ऊँचा है। राज–परिवार में उनका जन्म और लालन–पोषण हुआ, मेवाड़ के राज घराने में उनका विवाह हुआ, परन्तु समस्त सांसारिक ऐश्वर्य को तुच्छ मानते हुए मीरा ने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रभु–भक्ति में अर्पित कर दिया। लोक–निन्दा, अपमान, कष्ट और यहाँ तक कि प्राण लेने की चेष्टाएँ जैसे जहर का प्याला देना, काले नाग का हार आदि भी उन्हें प्रभु–प्रेम के मार्ग से डिगा न सकीं। मीरा बाई के प्रेम और विरह के स्वर कितनी बार सदियों से घर–घर में गूँज रहे हैं। मीरा बाई के पद केवल गेय पद ही नहीं हैं अपितु उनकी आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं। प्रियतम में समाकर उसका रूप हो जाने के लिए यह आत्मा की एक व्याकुल पुकार है। लेखकों का उद्देश्य इस शोध पत्र के माध्यम से मीरा बाई के विरह एवं प्रेम भावों को पाठक–वृन्द के सामने उजागर करना है ताकि वे भी अपना आध्यात्मिक जीवन उन्नत कर सकें। लेखकों का यह भी मानना है कि मीरा के पदों के भाव आज भी उतने ही मर्म–स्पर्शी हैं जितने उस समय थे जब मीरा बाई ने अपनी तन्मयता में उन्हें पहली बार स्वर बद्ध किया था।

प्रस्तावना

मीरा बाई राजस्थान के दो शक्तिशाली राज–परिवारों से क्रमशः जन्म से मेड़ता और विवाह के द्वारा मेवाड़ से संबन्धित होते हुऐ भी इतिहास की दृष्टि से सदैव ओझल ही रही । मीरा बाई के व्यक्तित्व और चरित्र के प्रभाव को उनका समकालीन समाज ग्रहण न कर सका । जिस राज–परिवार में उनका विवाह हुआ वह मीरा को हमेशा अपने कुल का कलंक ही मानता रहा तथा राजस्थान के तत्कालीन इतिहासकारों ने उनके नाम का केवल साधारण सा उल्लेख ही किया है । चारण और भाटों ने, जो केवल राजाओं और योद्धाओं का ही यशोगान करते रहे, उन्होनें भी अपने गीतों में मीरा बाई का जिक्र तक नहीं किया। परन्तु मीरा आसानी से न भुलायी जा सकी । उनकी भक्ति, निष्ठा, दृढ़ता, प्रभु प्रेम में समर्पित उनका जीवन, समय के पथ पर एक अमिट छाप छोड़ गये हैं।

मीरा बाई का सन्देश

राणा की कठोरता मीरा बाई को विचलित न कर सकी, न ही लोक निन्दा उन्हें अपने पथ से हटा सकी । वह अब लोक लाज के बंधनों को तोड़ चुकी थी। अब उनके मन में कोई सांसारिक विचार न थे, क्योंकि परमात्मा का प्रेम उनके मन, हृदय और आत्मा पर पूर्ण रुप से छा गया था। उनके जीवन में एक के बाद एक आने वाली दुर्घटनाओं ने उसे बहुत आघात पहुॅचाया। उन्हें संसार की असारता का आभास होने लगा। उनकी स्वाभाविक भक्ति भावना जाग्रत हो उठी और उनका झुकाव अन्तर की और होने लगा । मीरा बाई के इन पदों में मानसिक विरक्ति की भावना प्रकट होती हैः–

कौन करे पंचायत, जग में जीवन थोरा ।
छूटी रे काया, छूटी रे माया, छूटा सब संसार ॥

प्रेम एवं विरह की अवस्था

मीरा बाई अब प्रेम एवं विरह की इतनी ऊॅंची अवस्था में पहुॅच चुकी थी जिसमें स्तुति और निन्दा, यश और अपयश, दिन और रात उनके लिए समान थे । निर्तिकार और अनासक्त होने के साथ ही उनके उदार हृदय में सबके प्रति प्रेम की भावना थी। अपने एक पद में वे कहती हैं कि भक्त को तो एक वृक्ष की तरह हमेशा शांत, विशाल हृदय और सहिष्णु होना चाहिए । यदि उसे कोई काटने आता है तो भी वह उससे कोई वैर–भाव नहीं रखता और यदि कोई सींचने आता है तो ऐसी अवस्था में उससे मोह नहीं रखता। अपने ऊपर पत्थर फैंकने वालो को भी मधुर फल देता है । ऑधी एवं बरसात के वेग को वह बिना किसी शिकायत के शांत भाव से सहता है । सर्वदा समर्पण की भावना से ओत–प्रोत रहता हैः–

मीरा बाई के प्रायः सभी पदो में विरह एवं प्रेम की विरल धारा बह रहीं है । उनका अपना जीवन अपने प्यारे सतगरु और परमात्मा के वियोग की पीड़ा की एक लम्बी गाथा है । वे कहती हैं कि – '' प्रेम और विरह मुझे सतगुरु के प्रसाद के रुप में प्राप्त हुआ है ।'' मेरे सतुगरु ने मुझे दिव्य प्रेम के उस बाण से मारा है जो विरह में बुझा हुआ है –

प्रभु मिलन के मार्ग में प्रेम अगुआ बनकर आता है और उसी के पीछे आती है विरह की वेदना। विरह की पीड़ा तथा प्रियतम से मिलाप प्राप्त करने की व्याकुलता ही प्रभु–प्रेम को बढ़ाती है और दृढ़ता प्रदान करती है। मीरा बाई कहती हैं कि अपने विरह को ऑसूओं से सींचकर ही उन्होनें प्रेम रुपी बेल को विकसित किया है और वह बेल फैलकर उनके तन, मन और प्राणों पर छा गई है –

मीरा बाई के प्रेम और विरह के गीत मधुर भावनाओं से परिपूर्ण है। उनकी प्रफुल्लता एवं गहनता उनकी भक्ति की

कोमलता का स्पर्श पाकर और भी चित–आकर्षक हो गयी है । प्रेम अतिरेक और विरह की तीव्रता ने मीरा बाई के पदों को अत्यन्त मर्म–स्पर्शी बना दिया है । मिलाप के आनन्द और वियोग की पीड़ा की जैसी अभिव्यक्ति मीरा बाई ने की है, वह कवि कल्पना की उड़ान नहीं है, और न ही वह काव्य सौन्दर्य का कोई कृत्रिम प्रयास है । उनके पद उनके अपने अनुभव हैं, अपने उपर बीते दुखः–सुख के वृतान्त हैं, उनकी आन्तरिक भावनाओं को अनायास उद्वेग है । उनके काव्य की गहनता और साथ ही अनूठी सरलता केवत हृदय–स्पर्शी ही नहीं, प्रेरक भी हैं । उनके विरह के पद भक्तों में ही नही, घर–घर में भी लोक प्रिय है। भावनाओं की गहराई के साथ–साथ वाणी के लालित्य ने मीरा बाई के उनके पदों को अत्यन्त प्रभावशाली बना दिया है।

मीरा बाई के पदों में विरह वेदना का बड़ा सहज किन्तु करुण वर्णन मिलता है। विरह में उनकी पीड़ा ऐसी है न तो प्राण रहते और न ही निकलते हैं। ऐसी अवस्था में उन्हें चैन एवं आराम कहॉ और कैसे मिल सकता है । प्रियतम की शैया गगन–मण्डल पर हो और मेरी सेज इस धरती पर हो तो मैं मिलाप के सुख को कैसे प्राप्त कर सकती हूँ। मीरा बाई कहती हैं कि एक घायल प्राणी की अवस्था को वही जान सकता हे जिसे स्वंय ममार्न्तक घाव लगे हों अथवा वह जान सकता है जिसने विरह रुपी बाण से उनके ह्रदय को बेंधा हैं। मेरी व्यथा का अन्त तो तभी होगा जब स्वयं उनके प्रियतम वैध के वेश में आकर उपचार करेंगे।

अपनी विरह–वेदना को व्यक्त करते हुए मीरा बाई प्रभु से मिलाप के लिए प्रार्थना करती है। वे दिन–रात उनके आने की बाट जोहती है और उनके दर्शन के लिए व्याकुल ऑखे रो–रो कर लाल हो गयी हैं । अपनी विरह–वेदना को मीरा इस पदावली के माध्यम से प्रकट करती है –

प्यारे दर्शन दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय ।
जल बिन कमल, चंद बिन रजनी,
ऐसे तुम देख्यो बिन सजनी ।।
आकुल व्याकुल फिरूँ रैन–दिन, बिरह कलेजा खाय ।।
दिवस न भूख नींद नहीं रैना
मुख से कथन न आवै बैना ।।
कहा करूँ कुछ कहत न आवै, मिलकर तपत बुझाय ।।

निष्कर्ष

प्रेम एवं विरह की मधुर किंतु ओजस्वी व्यंजना के लिए और इन सबसे बढ़कर अपने प्रियतम से वियोग की दारुण व्यथा को मृदु करुणा के साथ ही मर्म भेदी प्रखरता सहित अपने पदों में साकार करने के लिए मीरा बाई के समकक्ष शायद ही कोई भक्त कवि आता है। विरह की पीड़ा तथा प्रियतम के साथ मिलाप करने की व्याकुलता प्रेम की ज्वाला को और प्रज्जवलित करती है।

इस प्रकार विरह सच्चे प्रेम को और दृढ़ बनाता है तथा प्रभु मिलन के मार्ग में सेतु का काम करता है। मीरा बाई अपने पद को समाप्त करती हुऐ प्रियतम के साथ एक हो जाने की उत्कंठा को प्रकट करते हुऐ वे कहती हैं –

"मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा।"

Librarian Rao Lal Singh College of Education Sidhrawali (Gurgaon)
***** Principal Rao Lal Singh College of Education ,Sidhrawali (Gurgaon)***

संदर्भ ग्रंथ

1 मीरा बृहत्पदावली, फतह सिंह, जोधपुंर : राजस्थान प्राच्य विधा प्रतिश्ठान, प्रथम संस्करण, 1973 ।
2 मीरा बाई का जीवन–वृत एवं काव्य, कल्याण सिंह शेखावत, जोधपुर : हिन्दी साहित्य मन्दिर, पहला संस्करण, 1974 ।
3 मीरा बाई की शब्दावली, इलाहाबाद : बेलवीडियर प्रिटिंग वर्क्स, तेरहवॉ संस्करण, 2000 ।
4 मीरा : प्रेम दीवानी, वीरेन्द्र सेठी, व्यास : राधा स्वामी सत्संग, सोलहवॉ संस्करण, 2001 ।
5 मीरा व्यक्तित्व और कृतित्व, पदमावती, वाराणसी : हिंदी प्रचारक संस्थान, प्रथम संस्करण ।